डी० बी० कॉलेज, जयनगर मधुबनी
नाम – मो० मुन्ना ,   दिनांक - 25,04,2020
सहायक प्राचार्य (अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग, BA-I

सुंदर

'पारिजात हरण' मैथिली नाटक विकास मे योगदान

मैथिली नाटकक विकास मे उमापतिक 'पारिजात हरण' मैथिली नाटक बड़ महत्वपूर्ण स्थान राखैत अछि, ओना एहिसँ पूर्व ज्योतिरिश्वर, विद्यापति, कवि गोविन्द, रामदास, आ देवानन्द मैथिली नाटकक विकास मे बहुत योगदान देलनि अछि। मुदा जाहि रूपक आपक सुदृढ़ धरातल पर मैथिली नाटक के उमापति आसिन कैलेन ताहि रूपक प्रयत्न आन कियो नहि कऽ सकलाह, ई नाटक, हरिवंश सँ 124 आ 135 पर आधारित अछि। भागवत पुरान तथा विष्णु पुरान मे सेहो एहि कथाक उल्लेख भेटैत अछि।

एहि नाटकक कथा वस्तु श्री कृष्ण द्वारा सत्यभामाक मानक रक्षार्थ उठाओल गेल यहि कृष्ण कलाप पर आधारित अछि। एकर कथा वस्तु बहुत छोट अछि। नारद मुनि एकटा पारिजात नामक पुष्प श्री कृष्ण कें दैत छथि, श्री कृष्ण ओ पुष्प अपन पत्नि रुक्मणी कें दऽ दैत छथि। ~~रुक्मणी~~ सतभामा रुसि रहैत छथिन। ओहि कालक सत्यभामा मनो भावक वर्णन नाटककार उमापति एहि प्रकारे कैने छथि -

सत्यभामा -
हरि सऊँ नेम आस कय लाओल
पाओल परिभव ठामे।
जलधर छाहरि तर हम सुतलहुँ
आतप भेल परिनामे।
सखि है मन जनु कहिअ मलाने
अपन करम फल हम ~~अ~~ उपभोगब।

तोहैं किअ तेजह परानै ॥ ध्रुवम् ॥

- - - - - - - - -

- - - - महरानि विरमानै ।

अर्थात हरिसँ ? प्रेम करबाक फल प्रतिकुल प्राप्त भेल जलधरक व्याह मे संकुल लैन मुदा ताहि सँ आत प्रेम त भेल । हे शारिब मन मे संतापित जनु कारि कर्मानुसार अपन फल के पाबि व्यथाक भागी बनी रहल छी । आहाँ एहि हेतु प्राप्य किंयाक तेजब पुरबक प्रित यद्यपि ओ बिसैर गेलाह तथापि एहि बेर हुनकर कोनो दोष नहि अछि । जे कतबो यतन सँ पीसला पर दोष नाहि मानैत अछि । आब कथमपि प्रेमक प्रदर्शन नाहि करता, पासणा सहस्त्रो बेर अमृतक रस मे मिजोला पर कोमल नहि होयत छैक ।

एक दिस सत्यभामा व्यथा मे अछि कारण श्री कृष्ण सत्यभामा के पारिजात पुष्प नहि देलाथिन दोसर दिस रुक्मणि बहुत खुशी अछि । प्रेमक उत्कर्षता पर पहुँचल अछि, उमापति रुक्मणिक प्रेमक उत्कर्षताक चर्चा रुक्मणिक मुँहे एहि प्रकारे नाटककार कहैत अछि —

रुक्मिणी - आज जन्म फल भेला । काम परितोजि हरि मोहि पुलकैल
पुजल पुरुब हम गौरी । आसा
आसा तानि परि पूरलि मोरी ॥

गीतकार उमापति जी मान आ विरह चित्रण करबा मे बेजोर छथि बिरह विपना नायिकाक (सत्यभामा) खिना अवस्थाक चित्रण बर सरस रूप कैला अछि । ओहि खिना अवस्था मे सौन्दर्यक परिवेक्षण कैलक अछि । उदाहरण स्वरूप कुछ पाति द्रष्टव्य -

कि कहब माधव तनिक बिसेसे
अपनहु तन धनि पाब कलेसे ।
अपनुक आनन आरसि हेरी ।
चानक भरम कोप कत बेरी ॥

श्री कृष्ण कोन तरहें सत्यभामाक मानक रक्षार्थ इन्द्रक बात सँ सम्पूर्ण पारिजात वृक्ष हरण कय कऽ अनैत छथि तहि सँ सम्बन्धित आछि - स्टेज पर आ रंग-मंच पर युद्ध कें नहि देखाओल गेल आछि। नारद मुँहसँ युद्धक वर्णन कराओल गेल आछि।

ई नाटक मात्र एक अंकक आछि। गीतक बाहुल्य आछि, पात्रक संख्या नहि आछि। कुल एहि मे 21 गोट गीत आछि एकर नाम यद्यपि पारिजातहरण नाटक आछि। तथापि नाटकक जे लक्षण कहल गेल आछि तहि सँ लक्षित नहि आछि, कारण एकांक संस्कृत नाटकक संस्कृत लक्षण ग्रंथ मे नहि मानल गेल आछि। मंगलगीत मे एक गोट भगवतीक गीत आछि। एहि नाटकक समस्त चमत्कार गीत मे नीहित आछि कथोपकथन संस्कृत एवं प्राकृत भाषा मे आछि चरित्र चित्रणक दृष्टिकोण सँ नारदक चरित्र कें प्रकाशित कैल गेल आछि। श्रृंगार प्रधान गीतक बाहुल्य रहितहुँ एहि नाटकक मुख्य रस वीर आछि। एहि नाटकक मुख्य उद्देश्य आछि नाटकीय गीतक माध्यम सँ मनोरंजन प्राप्त करबाक।